कोरोना वायरस (कोविड–19) से सुरक्षा हेतु लगाये गये लॉकडाउन का भारतीय जनजीवन पर प्रभावः एक विश्लेषण

स्वाति सक्सेना
शोध अध्येत्री, समाजशास्त्र विभाग,
गोकुलदास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद
ईमेलः saxenatax@gmail.com

सारांश

चीन से फैली वैश्विक महामारी कोरोना (कोविड–19) ने धीरे–धीरे पूरे विश्व को संक्रमित कर दिया। विश्व में शायद ही कोई देश ऐसा बचा होगा जो कि कोविड–19 के संक्रमण से प्रभावित न हुआ हो। अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, इटली जैसे विकसित एवं साधन सम्पन्न देश भी जब कारोना वायरस के समक्ष असहाय हो गये तब साधन विहीन देशों की स्थिति का अंदाजा तो सहज ही लगाया जा सकता है। यह वैश्विक महामारी सम्पूर्ण विश्व के समक्ष अनेक चुनौतियों को लेकर आयी है। समस्याओं से जूझते हुए प्रत्येक देश की अर्थव्यवस्था को भी बहुत नुकसान हुआ है। सर्वविदित है कि अभी तक इस वायरस से बचाव हेतु कोई दवा अथवा वैक्सीन उपलब्ध नहीं है। अतः कोविड–19 से बचाव हेतु केवल सुरक्षात्मक उपाय ही अपनाये जा रहे है। वैश्विक महामारी से बचाव हेतु विश्व के लगभग प्रत्येक देश में लॉकडाउन की प्रक्रिया अपनायी गयी। लॉकडाउन का भारतीय समाज एवं जनजीवन पर क्या प्रभाव पड़ा प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द *– कोरोना, कोविड–19, लॉकडाउन वैश्विक महामारी, सामाजिक दूरी*

प्रस्तावना

दिसम्बर महीने में चीने के हुवेई प्रान्त की राजधानी बुहान से कोविड–19 के संक्रमण का पहला केस विश्व के सामने आने के पश्चात् धीरे–धीरे विश्व के सभी देशों में कोरोना वायरस (कोविड–19) का संक्रमण फैल गया। अचानक इतनी तीव्रता से फैले घातक संक्रमण से किसी को भी संभलने का अवसर नहीं मिला। सुपर पावर अमेरिका सहित ब्राजील, ब्रिटेन, इटली जर्मनी जैसे देश जो न केवल विकसित है, अपितु इन देशों के पास उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं सहित सभी संसाधन भी भरपूर है यह देश भी जब इस कोरोना वायरस (कोविड–19) के संक्रमण के समक्ष लाचार तथा असहाय नजर आये तब गरीब एवं साधनविहीन देशों की गम्भीर स्थिति की कल्पना सहज ही की जा सकती है । वैश्विक महामारी के समय विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की भूमिका को भी संदेह से देखा गया क्योंकि जब तक विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना (कोविड–19) को वैश्विक महामारी घोषित किया तब तक तो इस वायरस ने पूरे विश्व को

संक्रमित कर दिया था। इसी कारण अमेरिका ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की कार्यप्रणाली से अप्रसन्नता दिखाते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) की सहायता राशि पर रोक लगा दी।

सर्वविदित है कि अभी तक कोरोना वायरस (कोविड–19) की न तो कोई कारगर दवा उपलब्ध हो पायी है और न ही वैक्सीन। अतः वायरस से बचाव हेतु केवल मानवीय सुरक्षात्मक उपाय ही अपनाये जा रहे हैं। इन उपायों के अन्तर्गत मास्क लगाना, स्वच्छता पर ध्यान देना व सामाजिक दूरी बनाये रखना आदि उपाय अपनाये जा रहे है। सामाजिक दूरी बनाये रखने के लिए प्रत्येक देश द्वारा लॉकडाउन की प्रक्रिया अपनायी गयी जिससे कोविड–19 की इस श्रृंखला को तोड़ा जा सके एवं मानव जीवन को इसके संक्रमण से बचाया जा सके। विश्व के अधिकांश देशों की जनता ने सरकार द्वारा लिये गये लॉकडाउन के निर्णय का स्वागत किया परन्तु भारत में इसका मिला–जुला प्रभाव देखनें को मिला । तबलीगी जमात तथा प्रवासी मजदूरों का पलायन ऐसे उदाहरण है कि जहाँ सामाजिक दूरी को गम्भीरता से नहीं लिया गया। इस लापरवाही का ही नतीजा है कि जहाँ लॉकडाउन के पहले चरण में कोविड–19 से संक्रमितों की संख्या केवल 564 थी वहीं 04 अक्टूबर तक यह संख्या बढकर 65 लाख से भी ऊपर हो गयी।

कहना न होगा कि जीवन की सुरक्षा हेतु प्रधानमन्त्री जी द्वारा लिया गया लॉकडाउन का निर्णय बहुत कारगर सिद्ध हुआ। सही समय पर लॉकडाउन के निर्णय से भारत में अन्य देशों जैसी गम्भीर स्थिति नहीं आ पायी परन्तु लॉकडाउन के कारण सभी को अनेक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना अवश्य करना पडा। देश के नागरिकों को अचानक लगे इस लॉकडाउन के कारण अपने–अपने घरों में बैठना पड़ा जिससे जनजीवन एकदम से थम गया। बहुत से लोग अपने घरों से दूर दूसरे शहरों में नौकरी, पढ़ाई, घूमने, इलाज कराने, और पारिवारिक समारोह में सम्मिलित होने के कारण गये थे परन्तु लॉकडाउन के कारण जो जहॉ था उसे वहीं रूकना पड़ा । ऐसे में लोगों को खाने पीने से लेकर पैसों तक की समस्या का सामना करना पडा। रेलें, बस, हवाई यात्रा, बाजार, दफ्तर, स्कूल, कालेज, होटल, सिनेमाघर सब बन्द हो गये। देश के इतिहास में शायद ऐसा पहली बार हुआ है जब रेलगाडियों तक के पहिए थम गए।

लॉकडाउन के कारण सब कुछ बन्द होने से जहाँ देश की अर्थव्यवस्था लड़खड़ा गयी वहीं कोविड–19 से सबसे ज्यादा प्रभावित दैनिक वेतनभोगी, फेरी एवं रेहड़ी लगाने वाले हुए । बहुत से लोगों का रोजगार छिन गया। प्रधानमन्त्री जी के आग्रह के पश्चात भी बहुत से लोगों को काम न करने पर वेतन नहीं मिला। पैसों के अभाव में आर्थिक दबाब पडने पर लोगों को शारीरिक तथा मानसिक समस्याओं का सामना भी करना पड़ा और सरकार द्वारा उपलब्ध करायी गयी सहायता सभी जरूरतमंद लोगों तक नहीं पहुॅच पायी। फिर भी भारत में स्थिती बहुत ज्यादा खराब नही हुई क्योकि लैंसेट पत्रिका द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन की मदद से किये गये 130 देशों के सर्वे की रिपोर्ट से स्पष्ट हो जाता है कि 90 फीसदी देशों के पास इस संकट से उबरने को पर्याप्त बजट का अभाव है। कोरोना काल में महिलाओं पर भी काम का दोहरा बोझ पडा। काम के अतिरिक्त दवाब के कारण उत्पन्न महिलाओं को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस कोरोना काल में घरेलू हिंसा के मामले में भी बढ़ोत्तरी देखी गयी । बच्चों की बात करें तो

सबसे ज्यादा बच्चे ही इस लॉकडाउन से खुश रहे क्योंकि बच्चों को न स्कूल जाने की चिन्ता रहीं न गृहकार्य का तनाव, न सुबह जल्दी उठना पड़ा न टयूशन्स, न टी0वी0 देखने पर प्रतिबन्ध न खेलने पर परन्तु जब से ऑनलाइन पढ़ाई शुरू हुई है तब से बच्चों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। कम्प्यूटर, लैपटाप पर अधिक समय बिताने के कारण बच्चों को मानसिक दवाब एवं नेत्र सम्बन्धित समस्यायें बढ़ गयी हैं लम्बे समय से शैक्षणिक तथा मनोरंजक गतिविधियॉ बन्द रहने से बच्चे अवसाद ग्रस्त भी हो रहे हैं। चिकित्सकों के अनुसार भी कोरोना काल में ऑब्सेसिब कंपल्सिव डिसआर्डर के मामले 6 गुना तक बढ़ गये हैं। इसके साथ ही कोरोना काल में लम्बे समय तक रिश्तेदारों एवं मित्रों से न मिल पाने के कारण सामाजिकता भी प्रभावित हुई है।

यद्यपि लॉकडाउन के समय में हर किसी को समस्याओं का सामना करना पडा परन्तु फिर भी अच्छी बात यह रही है कि इस समय लोगों में समाज सेवा एवं देशभक्ति की भावना भी देखने को मिली । लोगों ने विवाह, जन्मोत्सव एवं त्यौहारों पर दिखावा करना एंव फिजूलखर्ची बन्द कर दी और अपनी क्षमतानुसार गरीब एवं वंचित वर्ग की नकद, खा़द्यसामग्री, दवाएं, मास्क एवं अन्य दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुओं की पूर्ति करके, मदद पहुॅचायी। इसके अतिरिक्त ताली एवं थाली बजाकर एवं दिया तथा टार्च जलाकर एकता और देशभक्ति का भी संदेश दिया। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से लॉकडाउन के भारतीय जनजीवन पर पडने वाले प्रभाव को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत आनुभाविक शोध पत्र उ0प्र0 के मुरादाबाद जिले के 60 सूचनादाताओं से एकत्र किये गये आंकडों पर आधारित है । सभी सूचनादाता 30 से 50 वर्ष की आयु वर्ग के हैं। सूचनादाता का चुनाव उददेश्यपूर्ण निदर्शन विधि के माध्यम से किया गया है। प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा मौलिक विषय होने के कारण पुस्तकालय साहित्य के अभाव में अध्ययन की सुलभता के लिए विभिन्न समाचार पत्र, पत्रिकाएॅ तथा इंटरनेट के माध्यम से द्वितीयक तथ्यों का संकल्न किया गया है।

उद्देश्य

कोरोना वायरस (कोविड–19) से बचाव हेतु अपनाये गये लॉकडाउन की प्रक्रिया का जनजीवन पर पडने वाले सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभावों को ज्ञात करना।

उपकल्पनाएं

1.लॉकडाउन के कारण जनमानस में स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है जिसके कारण प्रदूषण का भी ह्रास हुआ है।

2.लॉकडाउन के कारण, परिवार के सदस्यों के साथ रहने से पारिवारिक सम्बन्धों में तो प्रगाढ़ता आयी है परन्तु सामाजिकता में ह्रास हुआ है।

3.लॉकडाउन के कारण लोगों को आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

विश्लेषण

सारणी संख्या 01 के माध्यम से सूचनादाताओं से कोविड–19 के प्रति व्याप्त भय के कारणों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है ।

सारणी – 01

कोविड–19 के प्रति भय के कारण

मतभार	संख्या	प्रतिशत
जानकारी का अभाव	43	71.66
अन्धविश्वास एवं अज्ञानता	17	28.34
योग	60	100

सारणी संख्या 01 के आंकडों से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 71.66 प्रतिशत सूचनादाता मानते है कि सही जानकारी के अभाव में लोगों में कोविड–19 के प्रति भय व्याप्त है जबकि 28. 34 प्रतिशत सूचनादाता इसका कारण अन्धविश्वास एवं अज्ञानता को मानते है।

सारणी संख्या 02 में सूचनादाताओं से स्वच्छता के स्तर की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 02 कोविड–19 का स्वच्छता पर प्रभाव

मतभार	संख्या	प्रतिशत
पूर्ववत	…….	……..
पूर्व से कम	…….	…….
पूर्व से अधिक	60	100
योग	60	100

सारणी संख्या 02 के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि शत प्रतिशत सूचनादाता मानते है कि कोविड–19 के कारण लोगों में साफ सफाई के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है।

सारणी संख्या 03 के माध्यम से कोविड–19 के पर्यावरण प्रदूषण पर पडने वाले प्रभावों को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 03 लॉकडाउन एवं प्रदूषण का स्तर

मतभार	संख्या	प्रतिशत
पूर्ववत	6	10
पूर्व से कम	54	90
पूर्व से अधिक	……	……
योग	60	100

सारणी संख्या 03 के निष्कर्षो से स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 90 प्रतिशत सूचनादाता मानते है कि लॉकडाउन के समय मे प्रदूषण का स्तर पूर्व से कम हुआ है तथा केवल 10 प्रतिशत सूचनादाता का कहना है कि प्रदूषण का स्तर पूर्ववत ही रहा जबकि पूर्व से अधिक विकल्प में कोई भी सूचनादाता परिलक्षित नहीं पाया गया। सारणी संख्या 02 एवं 03 के निष्कर्ष अध्ययन

की प्रथम उपकल्पना, ''लॉकडाउन के कारण जनमानस में स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है जिसके कारण प्रदूषण में भी ह्रास हुआ है'' सिद्ध होती है।

सारणी संख्या 04 के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि लॉकडाउन का लोगों के व्यक्तिगत /पारिवारिक सम्बन्धों पर क्या प्रभाव पड़ा है ।

सारणी सं 04 – लॉकडाउन का व्यक्तिगत /पारिवारिक सम्बन्धों पर प्रभाव

मतभार	संख्या	प्रतिशत
पूर्ववत	11	18.34
पूर्व से प्रगाढ़	49	81.66
योग	60	100

सारणी संख्या 04 के आंकडों का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि सर्वाधिक 81. 66 प्रतिशत सूचनादाता स्वीकार करते है कि लाकडाउन के समय लोगों के व्यक्तिगत एवं पारिवारिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आयी है जबकि 18.34 प्रतिशत सूचनादाता ऐसा नहीं मानते है।

सारणी संख्या 05 में सूचनादाताओं से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि क्या लॉकडाउन के कारण सामाजिकता प्रभावित हुई है अथवा नहीं।

सारणी सं 05 – लॉकडाउन का समाजिकता पर प्रभाव

मतभार	संख्या	प्रतिशत
हां	43	71.66
नहीं	17	28.34
योग	60	100

सारणी संख्या 05 के निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 71.66 प्रतिशत सूचनादाता का कहना है कि लॉकड़ाउन के कारण सामाजिकता प्रभावित हुई है जबकि 28.34 प्रतिशत सूचनादाता इससे असहमत है । सारणी संख्या 04 एवं 05 के निष्कर्षों से अध्ययन की उपकल्पना ''लॉकडाउन के कारण, परिवार के सदस्यों के साथ रहने से पारिवारिक सम्बन्धों में तो प्रगाढ़ता आयी है परन्तु सामाजिकता में ह्रास हुआ है'' की पुष्टि होती है ।

सारणी संख्या 06 में सूचनादाताओं से आर्थिक समस्याओं के विषय में जानकारी प्राप्त की गयी है।

सारणी सं 06 – लॉकडाउन एवं आर्थिक समस्याएं

मतभार	संख्या	प्रतिशत
हां	47	78.34
नहीं	13	21.66
योग	60	100

सारणी संख्या 06 के आंकडे दर्शाते हैं कि 78.34 प्रतिशत सूचनादाताओं को लॉकडाउन के समय आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा जबकि 21.66 प्रतिशत सूचनादाता को आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा । उल्लेखनीय है कि यह 21.66 प्रतिशत सूचनादाता सरकारी सेवारत थे और इन्हें समय पर वेतन प्राप्त होता रहा।

सारणी संख्या 07 में आर्थिक तंगी के कारण लोगों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 07 लॉकडाउन का स्वास्थ्य का प्रभाव

मतभारत	संख्या	प्रतिशत
हां	57	95
नहीं	3	5
योग	60	100

सारणी संख्या 07 के आंकडों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि 95 प्रतिशत सूचनादाताओं का कहना है कि आर्थिक तंगी एवं दवाबों के कारण उन्हें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ा जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पडा। केवल 5 प्रतिशत सूचनादाता ही ऐसे है जिन्हें किसी भी प्रकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या का सामना नहीं करना पडा। सारणी संख्या 06 एवं 07 के निष्कर्षो से अध्ययन की तीसरी एवं अन्तिम उपकल्पना ''लॉकडाउन के कारण लोगों को आर्थिक एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ा'' की पुष्टि होती है।

निष्कर्ष

शोधपत्र के उददेश्य एवं उपकल्पनाओं के सत्यापन के आधार पर लॉकडाउन के सकारात्मक प्रभावों को देखे तो निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि कोरोना वायरस (कोविड–19) से बचाव हेतु लगाये गये लॉकडाउन का सबसे अधिक प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा। कारोना के कारण आम जन में साफ सफाई के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई, और सडकों पर यातायात एवं आवाजाही कम होने से तथा कूड़ा करकट कम होने से प्रदूषण में कमी आयी जिससे जलवायु शुद्ध हो गयी। इस दौरान मैदानी क्षेत्रों से पहाडों के दर्शन होना अचंभित करने वाली घटना रही। इसके साथ ही लॉकडाउन के कारण घर में सभी सदस्यों के एक साथ रहने से पारिवारिक सम्बन्धों में भी प्रगाढ़ता देखने को मिली क्योंकि पूर्व में अतिव्यस्तता के कारण ऐसा सम्भव नहीं हो पाता था । मोबाइल व लैपटाप पर व्यस्त रहना जिन लोगों की दिनचर्या बन गया था उन्होंने भी परिवार के साथ पारम्परिक खेलों का आनन्द लिया तथा घर में अकेलापन महसूस करने वाले बुजुर्गों को भी परिवार का भरपूर साथ मिला और बच्चे भी दूरदर्शन पर पुनः प्रसारित होने वाले धार्मिक कार्यक्रमों को देखकर भारतीय संस्कृति से परिचित हुए। लॉकडाउन के नकारात्मक प्रभावों को देखें तो इस दौरान सामाजिक दूरी के नियम के कारण सामाजिकता में कभी देखने को मिली। विवाह, जन्मोत्सव, शवयात्रा तक में जाने से लोग बचे। लॉकडाउन का सबसे अधिक प्रभाव लोगों के रोजगार पर भी पड़ा। नौकरी छूटने एवं पैसों की तंगी के कारण बहुत से लोगों के लिए घर चलाना मुश्किल हो गया जिसका प्रभाव उनमें शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर पडा।

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि लॉकडाउन के भारतीय जनजीवन पर कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक प्रभाव पड़े। लॉकडाउन के प्रारम्भ में सबने इसका भरपूर आनन्द उठाया परन्तु जैसे–जैसे लॉकडाउन की अवधि बढ़ती गयी वैसे–वैसे लोगों की धैर्यशीलता भी

कम होती गयी, परन्तु इस कोरोना काल में लोगों ने भारतीय संस्कषति को पुनः अपनाया जिससे वह धीरे–धीरे दूर होते जा रहे थे। यद्यपि जनजीवन अभी पूरी तरह से सामान्य नहीं हुआ है परन्तु परिस्थितियों से अच्छे संकेत अवश्य प्राप्त हो रहे हैं।

सुझाव

लॉकडाउन ने हमें बहुत कुछ सिखाया है । लोगों का जीवन इस दौरान बहुत सरल हो गया है। दिखावा करने एवं फिजूलखर्ची पर सबने नियन्त्रण रखा। इसे आगे तक बनाये रखने की आवश्यकता है। स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम होगा यदि भविष्य में भी घर के खाने को ही प्राथमिकता दी जाये। इसके साथ ही पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए थोड़े–थोड़े समयान्तराल के पश्चात् लॉकडाउन जैसी ही कोई प्रक्रिया अपनायी जाये जिससे वातावरण प्रदूषण मुक्त हो सके और हमें सदैव ही शुद्ध हवा व पानी प्राप्त होता रहे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. चावरे वीरेन्द्र, *''कोविड–19 महामारी और वैश्विक राजनीति एक विश्लेषण,* ''राधाकमल मुखर्जी चिन्तन परम्परा, वर्ष 22 अंक 1 , जनवरी–जून 2020, पृ0 **9–19**
2. गोयल विजय, *''कोरोना संकट का सबसे ज्यादा भार परिवार में महिलाओं पर आ पड़ा है,* ''प्रभा साक्षी न्यूज नेटवर्क, 23 मई 2020
3. महामारी ने मानसिक स्वास्थ्य बिगाडा, हिन्दुस्तान, 10 अक्तूवर 2020 पृ0 **9**
4. शर्मा राजीव एवं भारद्वाज गीतांजलि, *''कोरोना ने छात्रों को दी उदासी, मन में भरा वहम''*, हिन्दुस्तान 10 अक्तूबर 2020 पृ0 **05**
5. बोस सुस्मिता, *''शारीरिक दूरी के इस दौर में कमजोर होते रिश्ते''*,हिन्दुस्तान 2020 पृ0 **08**